IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध नैतिक चिंतन की वर्तमान प्रासांगिकता

Dr. Harish Kumar Singh
Associate Professor History
R.S.G.U.P.G. College Pukhrayan Kanpur Dehat

ABESTRECT

बुद्ध के नैतिक चिंतन का उदय एवं विकास वैदिक कालीन कर्मकाण्ड एवं हिंसात्मक यज्ञों के विरूद्ध तीव्र प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ। संसार को दुःखमय मानते हुए, दुःखों से मुक्ति एवं आचरण की शुद्धता के लिए बुद्ध ने अष्टांग मार्ग की शिक्षा दी। मानव जीवन के लिए आष्टांग मार्ग का बहुत ही महत्व है, क्योकि इसमें अतिशय भोगवाद एवं अत्यधिक कठोर संन्यास इन दोनो अतिवादी दृष्टिकोणों का परित्याग करके मुक्ति के लिए मनुष्य को संतुलित **मध्यममार्ग** का अनुसरण करने का उपदेश दिया गया है। बुद्ध ने विचारों और आचरण की पवित्रता, सभी मनुष्यों की समानता, स्वतंत्र चिंतन एवं स्वयं निर्णय करने की क्षमता तथा सभी दृष्टियों से मनुष्य के स्वावलंबी होने की आवश्यकता को विशेष महत्व देकर मानव समाज का समुचित मार्गदर्शन किया। बुद्ध ने मनुष्यों की समानता को आधार मानकर उस जाति प्रथा का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया जिसके कारण एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से ऊंचा अथवा नीचा माना जाता था। बुद्ध का मानना था कि जन्म से सभी मनुष्य समान होते है, अपने गुणों एवं कर्मों के कारण ही किसी मनुष्य को अच्छा या बुरा कहा जा सकता है। समानता की इस विचारधारा का बुद्ध ने जो प्रचार किया उसका प्रभाव केवल उनके युग तक ही सीमित नहीं रहा। महात्मा गांधी, भीमराव अम्बेडकर आदि विचारको पर बुद्ध के उपदेशों का प्रभाव दिखायी देता है। बुद्ध का स्पष्ट मत था कि मनुष्य स्वयं के प्रयास से ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है, अपने भाग्य का निर्माण मनुष्य स्वयं कर सकता है ,,**आत्मदीपो भव,,**। इसके लिए उसे किसी वाह्य शक्ति का आधार लेने की आवश्यकता नहीं है। इस स्वावलंबन के साथ बुद्ध ने मनुष्य के लिए यह भी आवश्यक माना कि वह स्वतंत्र रूप से विचार करके अपने जीवन का मार्ग निश्चित करे, उन्होने मनुष्यो को अंधानुकरण से बचने की सलाह दी। स्वतंत्र चिंतन के बुद्ध का यह आग्रह विश्व के बहुत कम धर्मों में दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार सैकड़ो वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध ने भारत में विचारों की उस स्वतंत्रता एवं सहिष्णुता का प्रचार किया जो आज संपूर्ण विश्व में लोकतंत्र तथा बौद्धिक प्रगति की आधारशिला मानी जाती है। बौद्ध चिंतन की इस विशेषता के कारण ही विश्व में उसका व्यापक प्रचार प्रसार हुआ और उसने करोड़ो व्यक्तियों के जीवन को प्रभावित किया तथा आज भी कर रहा है,

बुद्ध का चिंतन बहुत ही व्यावहारिक एवं मानववादी है। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध दार्शनिक प्रश्नो के वाद–विवाद में न पड़कर अपना ध्यान संसार में विद्यमान दुःख तथा उससे मुक्ति प्राप्त करने के उपायों पर विचार किया, संसार दुखमय है–[1] संसार को दुखमय मानते हुए दुःखों से मुक्ति एवं आचरण की शुद्धता के लिए अष्टांग मार्ग की शिक्षा दी जिसका वर्णन चार आर्य सत्यों में किया गया है, मानवता के लिए अष्टांग मार्ग का बहुत ही महत्व है। क्योंकि इसमें अतिशय भोगवाद तथा अत्यधिक कठोर सन्यासवाद इन दोनो अतिवादी दृष्टिकोणों का परित्याग करके संतुलित मध्यम मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश दिया–[2]। सच्चे अध्यात्मिक जीवन की तुलना वीणा से की गयी है, जो मधुर स्वर केवल तभी निकालती है जब उसके तार न बहुत खिंचे हुए हो और न बहुत ढीले हों। वास्तव में मध्यम मार्ग नेत्रों को प्रकाश देता है चित्त को प्रकाशित करता हैं शक्ति, ज्ञान और निर्वाण की ओर ले जाता हैं–[3]। महात्मा बुद्ध ने ''आत्मदीपो भव'' का उद्घोष किया–[4]। बुद्ध का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना निर्वाण स्वयं प्राप्त करना होगा ईश्वर के प्रसाद या किसी गुरू की सहायता से नहीं, गुरू भी केवल मार्ग ही बता सकता है। धर्म के सम्बन्ध में बुद्ध का विचार था कि ''यह नदी पार करने के लिए नाव के समान है यदि कोई नदी पार कर नाव को सिर पर उठाकर चलने का विचार करे तो वह मूर्ख है''–[5]। इसी प्रकार बुद्ध ने धार्मिक अंधविश्वास का खण्डन करते हुए कहा कि '' धर्म को मन की शुद्धि एवं शील का साधन बनाने के बजाय अंधविश्वास के साथ उससे चिपका रहे तो वह अयोग्य है–[6]। महात्मा बुद्ध मानवता के सार्वभौम उत्थान मे विश्वास रखते थे, इसीलिए समस्त मानव को सत्य के निकट लाना चाहते थे। अहिंसा और नेतिकता के साथ ही त्याग एवं संयमित जीवन की सराहना करते थे,उनका मानना था कि मनुष्य को उचित अनुचित का विचार करके ही कार्य करना चाहिए और यही सबसे बड़ा मानव धर्म है। जिस कर्म से सब सुखी हों वही कर्म उचित है, तथा जिस कर्म से अपने को तथा दूसरों को दुख तथा आघात पहुॅचता हो वह कर्म उचित नहीं है–[7]। बुद्ध का जीवन दर्शन बहुत ही व्यावहारियक था, वे जात–पात के विरोधी थे कर्म के आधार पर मनुष्य को छोटा–बड़ा मानते थे, दासता से उन्हें घृणा थी। उन्होंने जीवन में कर्म की महत्ता को स्वीकार किया। बुद्ध ने मानव जीवन की दुर्बलताओं एवं त्रुटियों से ऊपर उठकर जीवन को देखा और अनुभव किया साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को उचित कर्म करने को निर्देशित किया। बुद्ध ने जाति प्रथा का दृढ़ता पूर्वक विरोध किया जिसके कारण एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से ऊॅचा या नीचा माना जाता था।

इस प्रकार हम देखते है कि महात्मा बुद्ध के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के आलोक में हम वर्तमान की समस्याओं का निराकरण ढूढ़ सकते है। मध्यम मार्ग को अपना कर विभिन्न धर्मो, पन्थों, समुदायों विचारों के बीच जो टकराव व्याप्त है, उसका निदान किया जा सकता है। इसी प्रकार आत्मदीपोभव का उद्घोष भी युगान्तकारी है, व्यक्ति का पराश्रित एवं धर्म तथा चमत्कार पर आश्रित रहने के बजाय स्वावलंबी होना चाहिए, कठोर एवं संयमित जीवन से अपनी वर्तमान समस्याओं का समाधान करना चाहिए। इसी प्रकार जाति प्रथा के सम्बन्ध में बुद्ध के विचारों को अपनाकर हम वर्तमान सामाजिक कटुता, असमानता एवं विभेद सामाजिक टकराव को समाप्त कर सकते है और समृद्ध भारत के निर्माण में समस्त नागरिकों को योगदान देने का अवसर प्रदान कर सकते है। साथ ही बुद्ध के अहिंसा के सिद्धान्त को अपनाकर वर्तमान हिंसक प्रवृत्ति को कम किया जा सकता है निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कि महात्मा बुद्ध अपने विचार एवं आचार के माध्यम से छठी शताब्दी ईसा पूर्व में एक सामाजिक क्रांति को जन्म दिया था जो सदियों से भारत एवं भारत के बाहर मानवता को प्रेरित करती आ रही है। विश्व के अनेक धर्मगुरूओं के विपरीत बुद्ध ने अपने उपदेशों के सम्बन्ध में शिष्यों की शंकाओ को सहर्ष सुना और उनके निराकरण का प्रयास किया, स्वतंत्र चिंतन के प्रति यह आग्रह विश्व के बहुत कम धर्मों में दिखयी देता हैं। सैकड़ो वर्ष पूर्व

महात्मा बुद्ध ने विचारों की उस स्वतंत्रता एवं सहिष्णुता का प्रचार किया जो आज सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र तथा बौद्धिक प्रगति की आधारशिला मानी जाती है।

घृणा को घृणा से खत्म नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसे प्रेम से ही खत्म किया जा सकता है जो की एक प्राकृतिक सत्य है.'' ''जो बीत गया उसमें नहीं उलझना चाहिए और ना ही भविष्य को लेकर ज्यादा चिंतित रहना चाहिए, बल्कि हमें वर्तमान में ही जीना चाहिए. यही खुशी से जीने का रास्ता है.'' ''नफरत से नफरत कभी खत्म नहीं हो सकती घृणा को घृणा से खत्म नहीं किया जा सकता है, बल्कि इसे प्रेम से ही खत्म किया जा सकता है जो की एक प्राकृतिक सत्य है.'' मानव के मनोवैज्ञानिक उन्नयन में बौद्ध धर्म का योगदान बहुत ही अहम् है , बौद्ध धर्म में ज्ञान प्राप्ति के द्वार सभी वर्ग स्त्री और पुरूष के लिए खुले होते हैं। बौद्ध धर्म आदमी और आदमी के बीच समानता को बढ़ावा देता है क्योंकि समानता श्रेष्ठतम व्यक्ति के जीवित रहने में सहायक होती है चाहे वह योग्यतम न हो। समाज को श्रेष्ठतम आदमी चाहिए योग्यतम नहीं। बौद्ध धर्म एक न्याय संगत धर्म है , जो आदमी की अपनी मनोवृत्ति में से उत्पन्न होती है।बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति को बौद्धिक, साहित्यिक, कलात्मक और स्थापत्य क्षेत्र में एक नई गति प्रदान की।

बौद्ध धर्म कई शाखाओं में विभाजित है। थेरावाद बौद्ध धर्म पाली का उपयोग करता है, क्योंकि यह मुख्य भाषा है जिसके साक्ष्य लिखित और उसी भाषा में विद्यमान हैं, मंत्र संस्कृत में मौजूद हैं जो मूल भाषा थी जिसमें बुद्ध ने उपदेश दिया था। लेकिन महायान बौद्ध धर्म संस्कृत भाषा का बहुत कम उपयोग करता है। बुद्धवचन ''बुद्ध का शब्द'' में बुद्ध के उपदेश और कार्य शामिल हैं जिन्हें ''सूत्र'' के रूप में भी जाना जाता है, जबकि अन्य ग्रंथों में शस्त्र और अभिधर्म शामिल हैं। अन्य विहित ग्रंथ जैसे सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक भी पाली भाषा में लिखे गए थे

बुद्ध ने जाति व्यवस्था का पालन करने और हिंदुओं द्वारा स्थापित लोगों के प्रति क्रूरता और असमानता को दृढ़ता से इनकार कर दिया। बाद में, अम्बेडकर ने भी इसे अपनाया और प्रत्येक व्यक्ति को यह स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जो शांतिपूर्ण जीवन को हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं मानते। मानवता होनी चाहिए तभी हम एक समान और स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे। जब महायान ने बुद्ध की मूर्ति की पूजा करना शुरू किया, तो इसने हिंदुओं को अपने अलग देवताओं की पूजा करने के लिए प्रेरित किया। बौद्ध धर्म का सबसे आकर्षक योगदान मूर्तियों और वास्तुकला के क्षेत्र में था। बौद्ध कला और मूर्तिकला बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ विकसित हुई। अशोक के समय से कला और वास्तुकला में पत्थर का उपयोग किया जाता था। कई स्तूप, चौत्य और स्तंभों का निर्माण किया गया था।, सारनाथ, भरहुत, सांची और जयगढ़ आदि स्थानों पर स्तूप बौद्ध कला और वास्तुकला के अद्भुत नमूने हैं। गांधार और मथुरा कला के अनुसार बुद्ध और बोधिसत्वों की बड़ी संख्या में मूर्तियां बनाई गईं। बौद्धों ने गुफा मंदिरों को समर्पित करने की मिसाल कायम की और इस प्रथा का पालन हिंदू और जैन आदि करते थे।

बौद्ध धर्म ने भारत और विदेशी देशों के बीच एक अंतरंग संपर्क स्थापित किया। बौद्ध भिक्षुओं ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से बुद्ध के विचारो को विदेशों तक पहुंचाया। बाद में और विदेशी बौद्ध तीर्थयात्री और छात्र ज्ञान की तलाश में भारत आए।

बौद्ध धर्म ने रूढ़िवादी ब्राह्मणवाद को सबसे बड़ा झटका दिया। बुद्धवाद ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में गहन प्रभाव डाला। इसने बिना किसी जटिल, विस्तृत और अनपेक्षित अनुष्ठानों के एक लोकप्रिय धर्म विकसित किया, बौद्ध धर्म का नैतिक पक्ष दान, पवित्रता, आत्म बलिदान और सत्यता और जुनून पर नियंत्रण के आधार पर भी सरल था। इसने प्रेम, समानता और अहिंसा पर बहुत जोर दिया। यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विश्वास का एक लेख बन गया। इसने इस तथ्य पर जोर दिया कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। यद्यपि बौद्ध धर्म कभी भी ब्राह्मणवाद को अपने उच्च स्थान से विमुख नहीं कर सका, लेकिन इसने निश्चित रूप से इसे झटका दिया और भारतीय समाज में संस्थागत परिवर्तनों को प्रेरित किया।पशु बलि, उपवास और तीर्थयात्रा पर आधारित अनुष्ठानों सहित जाति व्यवस्था और उसकी बुराइयों को खारिज करते हुए, इसने समानता का प्रचार किया। सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने से बौद्ध धर्म को भारतीय उपमहाद्वीप के सीमाओं को पार करने में मदद मिली और यह विश्व धर्म बन गया। शिक्षा के क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने शिक्षा को व्यावहारिक, क्रियात्मक और सामाजिक कल्याण की दिशा में सक्षम बनाने का प्रयास किया। नालंदा, तक्षशिला जैसे अधिकांश प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के उत्पाद थे

भारतीय चिंतन की यह विशेषता रही है कि यहां धर्म–दर्शन और नीति में पूर्ण पृथकता नहीं मानी गयी है।एक को दूसरे के ऊपर निर्भर माना गया है।यहां सदा से यह धारणा प्रचलित रही कि बिना नैतिक पवित्रता के सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता।इतना ही नहीं, बिना बुद्धि के द्वारा सद्–असद्– विवेक किये मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।श्रद्धालु व्यक्ति को ही यथार्य ज्ञान प्राप्त होता है–''श्रद्धावान लभते ज्ञानम''। ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं–''ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।''यहां दर्शन का जीवन एवं चारित्रिक पवित्रता से अविभाज्य संबन्ध स्थापित किया गया है।यही कारण है कि यहां के दार्शनिक उच्च कोटि के आचारनिष्ठ एवं चरित्रवान व्यक्ति हुए

बुद्ध ने जाति व्यवस्था का पालन करने और हिंदुओं द्वारा स्थापित लोगों के प्रति क्रूरता और असमानता से दृढ़ता से इनकार कर दिया। बाद में, अम्बेडकर ने भी इसे अपनाया और प्रत्येक व्यक्ति का यह स्वीकार करने के लिए स्वागत किया, जो शांतिपूर्ण जीवन को हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं मानते।बौद्ध धर्म ने लोगों को सत्य, अहिंसा, भाईचारा, आदि जैसे सरल मूल्यों की खेती करना सिखाया। मानवता सबसे बड़ी होनी चाहिए तभी हम एक समान और स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे।जब महायान ने बुद्ध की छवि की पूजा करना शुरू किया, तो इसने हिंदुओं को अपने अलग देवताओं की पूजा करने के लिए प्रभावित किया। हालाँकि, उन्होंने अपने अनुष्ठानों को थकाऊ करते हुए पाया, यही कारण है कि कुछ हिंदुओं ने ध्यान के माध्यम से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। कुछ हिंदू बौद्धों में भी परिवर्तित हुए।में बौद्ध धर्म का सबसे आकर्षक योगदान मूर्तियों और वास्तुकला के क्षेत्र में था। बौद्ध कला और मूर्तिकला बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ विकसित हुई। अशोक के समय से कला और वास्तुकला में पत्थर का उपयोग किया जाता था। कई स्तूप, चौत्य और स्तंभों का निर्माण किया गया था।, सारनाथ, रुनदी, भरहुत, देलियुली और जयगढ़ आदि स्थानों पर स्तूप बौद्ध कला और वास्तुकला के कुछ नमूने हैं। गांधार और मथुरा कला के अनुसार बुद्ध और बोधिसत्वों की बड़ी संख्या में मूर्तियां बनाई गईं। बौद्धों ने गुफा मंदिरों को समर्पित करने की मिसाल कायम की और इस प्रथा का पालन हिंदू और जैन आदि करते थे।

बौद्ध धर्म ने भारत और विदेशी देशों के बीच एक अंतरंग संपर्क स्थापित किया। बौद्ध भिक्षुओं ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से बुद्ध के सुसमाचार को विदेशों तक पहुंचाया। बाद में और विदेशी बौद्ध तीर्थयात्री और छात्र ज्ञान की तलाश में भारत आए। भारत आने वाले विदेशियों को भारत की समृद्ध संस्कृ ति पर विजय प्राप्त हुई और उन्होंने अपने नाम और पंथ छोड़ दिए और हिंदू नामों और हिंदू धर्म को अपनाया। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने बड़े पैमाने पर संश्लेषण में योगदान दिया जिसने आधुनिक हिंदू समाज का उत्पादन किया।

बौद्ध धर्म ने रूढ़िवादी ब्राह्मवाद को सबसे बड़ा झटका दिया। बुद्धवाद ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में गहन प्रभाव डाला। इसने बिना किसी जटिल, विस्तृत और अनपेक्षित अनुष्ठानों के बिना एक लोकप्रिय धर्म विकसित किया, जिसमें आवश्यक रूप से पुरोहित वर्ग की आवश्यकता थी। यह इसकी सामूहिक अपील का एक कारण था। बौद्ध धर्म का नैतिक कोड दान, पवित्रता, आत्म बलिदान और सत्यता और जुनून पर नियंत्रण के आधार पर भी सरल था।इसने प्रेम, समानता और अहिंसा पर बहुत जोर दिया। यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विश्वास का एक लेख बन गया। इसने इस तथ्य पर जोर दिया कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। यह ईश्वर के किसी विस्तृत विचार से रहित था। यद्यपि बौद्ध धर्म कभी भी ब्राह्मणवाद को अपने उच्च स्थान से विमुख नहीं कर सका, लेकिन इसने निश्चित रूप से इसे झटका दिया और भारतीय समाज में संस्थागत परिवर्तनों को प्रेरित किया।पशु बलि, संरक्षण, उपवास और तीर्थयात्रा पर आधारित अनुष्ठानों सहित जाति व्यवस्था और उसकी बुराइयों को खारिज करते हुए, इसने कुल समानता का प्रचार किया। सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने से बौद्ध धर्म को भारतीय उपमहाद्वीप के सीमाओं को पार करने में मदद मिली और यह विश्व धर्म बन गया। शिक्षा के क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने शिक्षा को व्यावहारिक, क्रियात्मक और सामाजिक कल्याण की दिशा में सक्षम बनाने का प्रयास किया। नालंदा, तक्षशिला जैसे अधिकांश प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के उत्पाद थे

किसी देश की राजनीतिक और सैनिक शक्ति उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं पर निर्भर करती है। बौद्ध धर्म में ज्ञान प्राप्ति के द्वार सभी वर्ग , स्त्री और पुरूष के लिए खुले होते हैं। बौद्ध धर्म आदमी और आदमी के बीच समानता को बढ़ावा देता है।क्योंकि समानता श्रेष्ठतम व्यक्ति के जीवित रहने में सहायक होती है चाहे वह योग्यतम न हो। समाज को श्रेष्ठतम आदमी चाहिए योग्यतम नहीं। बौद्ध धर्म एक न्याय संगत धर्म है , जो आदमी की अपनी पुण्यप्रद मनोवृत्ति में से उत्पन्न होती है।बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति को बौद्धिक, साहित्यिक, कलात्मक और स्थापत्य क्षेत्र में एक नई गति प्रदान की यहां तक कि यह भारत से पूरी तरह से गायब हो गया है, इसका जन्म स्थान। जैन धर्म की तरह, बौद्ध धर्म ने भारतीय संस्कृति और लोगों के दिमाग सेट को प्रभावित करने में एक लंबा रास्ता तय किया।

बौद्ध धर्म कई शाखाओं में विभाजित है। थेरवाद बौद्ध धर्म पाली का उपयोग करता है, क्योंकि यह मुख्य भाषा है जिसके समान लिखित और उसी भाषा में विद्यमान हैं और इस मूल भाषा में पढ़ने की उम्मीद है। मंत्र संस्कृत में मौजूद हैं जो मूल भाषा थी जिसमें बुद्ध ने उपदेश दिया था। लेकिन महायान बौद्ध धर्म संस्कृत भाषा का बहुत कम उपयोग करता है। बुद्धवचन ''बुद्ध का शब्द'' में बुद्ध के उपदेश और कार्य शामिल हैं जिन्हें ''सूत्र'' के रूप में भी जाना जाता है, जबकि अन्य ग्रंथों में शस्त्र और अभिधर्म शामिल हैं। अन्य विहित ग्रंथ जैसे सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक भी पाली भाषा में लिखे गए थे।

बौद्ध धर्म का पालन करने के लिए सूक्ष्म था और ब्राह्मण संस्कृति, परंपराओं और अनुष्ठानों की जटिलताओं से मुक्त आसानी से सुलभ था। लोगों ने इसे अपनी वास्तविक भाषा के कारण दुनिया भर में अपनी सरल भाषा में निष्कर्ष दिया।

बुद्ध ने जाति व्यवस्था का पालन करने और हिंदुओं द्वारा स्थापित लोगों के प्रति क्रूरता और असमानता से दृढ़ता से इनकार कर दिया। बाद में, अम्बेडकर ने भी इसे अपनाया और प्रत्येक व्यक्ति का यह स्वीकार करने के लिए स्वागत किया, जो शांतिपूर्ण जीवन को हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं मानते।बौद्ध धर्म ने लोगों को सत्य, अहिंसा, भाईचारा, आदि जैसे सरल मूल्यों की खेती करना सिखाया। मानवता सबसे बड़ी होनी चाहिए तभी हम एक समान और स्वस्थ समाज का निर्माण कर पाएंगे।जब महायान ने बुद्ध की छवि की पूजा करना शुरू किया, तो इसने हिंदुओं को अपने अलग देवताओं की पूजा करने के लिए प्रभावित किया। हालाँकि, उन्होंने अपने अनुष्ठानों को थकाऊ करते हुए पाया, यही कारण है कि कुछ हिंदुओं ने ध्यान के माध्यम से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। कुछ हिंदू बौद्धों में भी परिवर्तित हुए।भारत में बौद्ध धर्म का सबसे आकर्षक योगदान मूर्तियों और वास्तुकला के क्षेत्र में था। बौद्ध कला और मूर्तिकला बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ विकसित हुई। अशोक के समय से कला और वास्तुकला में पत्थर का उपयोग किया जाता था। कई स्तूप, चौत्य और स्तंभों का निर्माण किया गया था।

शिक्षा के प्रसार में बौद्ध धर्म का विशेष योगदान रहा।नालन्दा, तक्षशिला और विक्रमशिला के विश्विद्यालय शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे सांची, सारनाथ, रुनदी, भरहुत, देलियुली और जयगढ़ आदि स्थानों पर स्तूप बौद्ध कला और वास्तुकला के कुछ नमूने हैं। गांधार और मथुरा कला के अनुसार बुद्ध और बोधिसत्वों की बड़ी संख्या में मूर्तियां बनाई गईं। बौद्धों ने गुफा मंदिरों को समर्पित करने की मिसाल कायम की और इस प्रथा का पालन हिंदू और जैन आदि करते थेः

बौद्ध धर्म ने भारत और विदेशी देशों के बीच एक अंतरंग संपर्क स्थापित किया। बौद्ध भिक्षुओं ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से बुद्ध के सुसमाचार को विदेशों तक पहुंचाया। बाद में और विदेशी बौद्ध तीर्थयात्री और छात्र ज्ञान की तलाश में भारत आए। भारत आने वाले विदेशियों को भारत की समृद्ध संस्कृ ति पर विजय प्राप्त हुई और उन्होंने अपने नाम और पंथ छोड़ दिए और हिंदू नामों और हिंदू धर्म को अपनाया। इस प्रकार बौद्ध धर्म ने बड़े पैमाने पर संश्लेषण में योगदान दिया जिसने आधुनिक हिंदू समाज का उत्पादन किया।

बौद्ध धर्म ने रूढ़िवादी ब्राह्मवाद को सबसे बड़ा झटका दिया। बुद्धवाद ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को आकार देने में गहन प्रभाव डाला। इसने बिना किसी जटिल, विस्तृत और अनपेक्षित अनुष्ठानों के बिना एक लोकप्रिय धर्म विकसित किया, जिसमें आवश्यक रूप से पुरोहित वर्ग की आवश्यकता थी। यह इसकी सामूहिक अपील का एक कारण था। बौद्ध धर्म का नैतिक कोड दान, पवित्रता, आत्म बलिदान और सत्यता और जुनून पर नियंत्रण के आधार पर भी सरल था।

भीमराव अम्बेडकर मानते थे कि भिक्षु संघ अत्यंत लोकतांत्रिक संस्या थी इसने प्रेम, समानता और अहिंसा पर बहुत जोर दिया। यह बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विश्वास का एक लेख बन गया। इसने इस तथ्य पर जोर दिया कि मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। यह ईश्वर के किसी विस्तृत विचार से रहित था। यद्यपि बौद्ध धर्म कभी भी ब्राह्मणवाद को अपने उच्च स्थान से विमुख नहीं कर सका, लेकिन इसने निश्चित रूप से इसे झटका दिया और भारतीय समाज में संस्थागत परिवर्तनों को प्रेरित किया। बौद्ध धर्म का अम्बेडकर कपर व्यापक प्रमाण पत्र वे मानते थे, कि स्वाधीन समाज के लिए धर्म आवश्यक है। 2

मनुष्य केवल अपने प्रयासों से ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है, आत्मदीपोभव मनुष्य अपने भाग का निर्माता है। स्ववलींबन को आवश्यक माना, जाति प्रथा का देण्तापूर्वक विराध किया जाति प्रथा के विरूद्ध गौतम बुद्ध ने जिस विचार धारा का प्रचार किया व आज भी प्रसांगिक है। स्वतंत चिंतन के प्रति बुद्ध का आग्रह का संपूर्ण विश्व में लोकतंत्र तथा बौद्धिक प्रगति की आधार शिला मानी जाती है।

भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध चिंतन से प्रभावित हो कर आत्मनिर्भता सामाजिक समरस्ता एवं मानवाधिकारो के संरक्षण के लिए कार्य किय। बौद्ध नैतिक मूल्य एवं गांधी के विचारो में अनेक समान्ता है। आहिंसा, समरस्ता, सामाज सेवा, समाजिक न्याय, प्रमुख है। सत्याग्रह का आधार अहिंसा है। सर्वोदय एवं शांति का संदेश महत्वपूर्ण है। बौद्ध चिंतन का वैशविक संदेश आहिंसा समरस्ता और समानता के प्रति सर्मपण की भावना है। यह धर्म सभी मानव के बीच शांति एवं सहयोग को प्रोत्साहित करता है। चाहे धर्म जाति या राष्ट्रीयता का हो बौद्ध चिंतन में संपूर्ण मानवता के प्रति सहयोग और दयालुता की महतवपूर्ण भूमिका है, संदेश में है कि हमें एक दूसरे का सम्मान करना, सहयता करना और सामाजिक न्याय की दिशा में काम करना चाहिए

पशु बलि, संरक्षण, उपवास और तीर्थयात्रा पर आधारित अनुष्ठानों सहित जाति व्यवस्था और उसकी बुराइयों को खारिज करते हुए, इसने कुल समानता का प्रचार किया। सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने से बौद्ध धर्म को भारतीय उपमहाद्वीप के सीमाओं को पार करने में मदद मिली और यह विश्व धर्म बन गया। शिक्षा के क्षेत्र में बौद्ध धर्म ने शिक्षा को व्यावहारिक, क्रियात्मक और सामाजिक कल्याण की दिशा में सक्षम बनाने का प्रयास किया। नालंदा, तक्षशिला जैसे अधिकांश प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के उत्पाद थे बौद्ध धर्म के बारे में भी कुछ ऐसा ही हुआ। बौद्ध धर्म से पहले भारत में हिन्दू एवं जैन धर्म सहस्त्रों वर्षों से विद्यमान थे। बौद्ध धर्म के उत्थान का प्रमुख कारण था हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियाँ। यह समय पूरे विश्व के सभ्य समाज में पुनरुत्थान का युग था। इसी समय भारत में ही भगवान महावीर ने जैन धर्म का पुनः प्रसार किया। यूनान में सुकरात भी कुछ समय बाद ही हुए। हिन्दू धर्म के विरोधी इस बात पर जोर देते हैं कि हिंसा के विरोध में इस धर्म का प्रादुर्भाव हुआ परन्तु वह यह भूल जाते हैं कि अहिंसा की शिक्षा द

भारतीय चिंतन की यह विशेषता रही है कि यहां धर्म–दर्शन और नीति में पूर्ण पृथकता नहीं मानी गयी है।एक को दूसरे के ऊपर निर्भर माना गया है।यहां सदा से यह धारणा प्रचलित रही कि बिना नैतिक पवित्रता के सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता।इतना ही नहीं, बिना बुद्धि के द्वारा सद्–असद्– विवेक किये मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।श्रद्धालु व्यक्ति को ही यथार्य ज्ञान प्राप्त होता है–''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्''। ज्ञानके बिना मुक्ति संभव नहीं–''ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।''यहां दर्शन का जीवन एवं चारित्रिक पवित्रता से अवियोज्य संबन्ध स्थापित किया गया है।यही कारण है कि यहां के दार्शनिक उच्च कोटि के आचारनिष्ठ एवं चरित्रवान व्यक्ति हुए इसका मूल कारन उनके खुद के ग्रन्थ है जो हिन्दुओं के प्रति हीन भावना से

ग्रस्त हैं जिनमें ऐसे ऐसे देवी देवता हैं जिनका नाम हमारे देवी देवता के नाम से मिलते हैं जिससे हम कंफ्यूज हो जाते हैं की ये तो हमारे ही देवता हैं। लेकिन जब ग्रंथों में उनको पढ़ो तो पता चलता है की ये देवी देवता तो हमरे देवी देवता को नीचे दिखते और अपमान कर रहे है। ये इनके काल्पनिक देवी देवता हैं जो इस लिए बनाये गए की केवल एक इंसान के दर्शन पर यदि कोई धर्म बना देंगे तो जब उस अदर्शन में कमियां दिखेंगी तो धम्म नष्ट हो सकता है।

ईसा से 600 वर्ष पहले जब गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म की नींव रखी तब इस बात के अनेक सामाजिक और राजनैतिक कारण भी उनके बारे में जानेंगे कितुं बुद्ध से जब इस विषय पर पूछा गया था कि आप ने इस धर्म को जो शुरू किया है क्या लगता है कि यह कब तक चलेगा तब स्वयं बुद्ध ने कहा कि लगभग 1000 वर्ष तक कितुं शरूआत में स्त्रियों को भिक्षुणी बनने का अधिकार नही था बाद में आनंद और अपनी मौसी के दबाब में बुद्ध ने स्त्रियों को भी भिक्षुणी बनने का अधिकार दे दिया तब उन्होंने कहा था कि अब यह धर्म 500 वर्ष से अधिक नही चलेगा

बौद्ध धर्म के मूल मान्यताओं एक उपदेशों का अनुसरण करके हम समद्ध और सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकते है, इस तरह बौद्ध चिंतन वैश्विक शांति एवं सम्रद्धि की कामना करता है।

बौद्ध नैतिक चिंतन की वर्तमान प्रासांमिकता में समय के साथ बदलाव आया है। आजकल लोग ध्यान और ध्यानाक्यास के माध्ययम से बौद्ध नैतिकता की अधिक महत्वाकांता कर रहे हैं। वे समाज में सहानुभूति, समर्पण, शांति और संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करने की दिशा में वैद्ध नैतिकता के मूल्यों को अपना रहे है, साथ ही आधुनिक विश्व में सामाजिक न्याय वातावरणीय संरक्षण एवं सामूहिक सामाजिक उत्यान में अहम भूमिका है।

बौद्धि नैतिक चिंतन में सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका है, यहॉ भौतिक एवं मानविक संसाधनो के निण्यम वितरण समाज में समानता, और न्याय की दृष्टि से समाज के सभी वर्गो के लिए इंसानियत की अधिकता को बठावा दिया जाता है।

बौद्ध चिंतन में स्वावलंबन का भाव है। आशय आमविश्वास के साथ अपने जीवन को सहज एवं स्वतंत्रता से जीना बौद्ध चिंतन में महिलाओं के साथ समानता एवं सम्मान के लिए विशेष महत्व दिया जाता है। बुद्ध ने महिलाओं की शिक्षा एवं उनके उत्यान का समयो किया। उन्हें सामाजिक आर्थिक, धार्मिक आधिकार दिलाने के पतधर थे। ध्यान और सम्यक बोध को अपनी जीवन शैली में शामिल करने को प्राथमिकता देते है। अनुशासन, समाधान, एवं समपर्ण के मूलयो को महत्वपूर्ण मानते है, पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक न्याय महत्वपूर्ण है। बौद्ध नैतिक चिंतन को सामाजिक क्रान्ति के रूप में देखा जा सकता है, बौद्ध धर्म ने सामाजिक न्याय शांति और सामाजिक समरस्ता के मूल्यों को प्रात्साहित किया इसने जातिवाद असमानता और अन्याय के खिलाफ आंदोलन और समाज में सुधार के लिए प्रेरित किया, बौद्ध नैतिक चिंतन ने मानाकमी समग्रविकास, और अहिंसा को प्रार्यामकत दी। आत्मदीपोभव वैद्ध चिंतन का महत्वपूर्ण सिंद्धान्त है, आशयस'' तुम अपनी आत्मा को पूकाशमान बनाओं यहॉ मानव की अद्रितीय शक्तियों और उनमें अंतारनिहित प्रकाश की महत्व पर बल दिया गया है।

संदर्भ सूची–

1. मज्झिम निकाय
2. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो0हरेन्द्र प्रसाद सिंहा 1993, पृष्ठ 121
3. ओल्डेनवर्ग– BUDDHISTIC PHILOSOPHY पेज सं0 105
4. दीघनिकाय 16, महापरिनिब्बानसुत्त
5. मज्झिम निकाय
6. मज्झिम निकाय
7. प्रो0 हरिएन्ना–भारतीय दर्शन पृष्ठ 74
8. प्रोफेसर हरेंद्र प्रसाद सिन्ह 'भारतीय दर्शन की रूपरेखा'
9. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की इंडियन फिलॉसफी
10. एसएन दासगुप्ता की हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी
11. डा. रामविलाश शर्मा गांधी अम्बेडकर लोहिया एवं भारतीय इतिहास की समस्याऐ वाणी प्रकाशन पृठ–625
12. नीतिशास्त्र के मूल सिंद्धान्त डा0 वेदप्रकाश वर्मा, पृठ–359
13. बुद्ध या मार्क्स, लैम्ब संपूर्ण अंबेडकर वांगमय खण्ड–3, पृठ–359